अनुक्रमणिका

भूमिका **i-vi**

प्रकाशित शोध-पत्र सूची और शोध कार्य से बाहर पेटेंट **vii**

प्रथम अध्याय : आदिवासी साहित्य: अवधारणा, स्वरूप एवं परिचय **1-49**

i) आदिवासी की अवधारणा

ii) आदिवासी साहित्य का स्वरूप

iii) आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों का परिचय

द्वितीय अध्याय : आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यास: भूमंडलीकरण और विकास की अवधारणा **50-103**

i) विकास की अवधारणा

ii) विकास से संबंधित योजनाएँ: आर्थिक एवं शैक्षिक

iii) आदिवासी जीवन के संदर्भ में विकास

iv) विकास की व्यवहारिक विसंगतियाँ

तृतीय अध्याय : आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में निहित सामाजिक जीवन **104-152**

i) सामाजिक अस्मिता

ii) स्त्रियों की स्थिति

iii) सामाजिक संक्रमण और प्रभाव

iv) सामाजिक मूल्य

चतुर्थ अध्याय : आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित राजनैतिक जीवन **153-206**

i) समाज में स्वशासन की परिकल्पना

ii) क्षेत्रीय नेतृत्व का प्रश्न

iii) क्षेत्रीय राजनीति बनाम राष्ट्रीय राजनीति

पंचम अध्याय : आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में निहित धार्मिक जीवन **207-243**

i) धार्मिक मान्यताएँ

ii) धर्म का समाज में हस्तक्षेप

iii) धर्मांतरण के कारण और उसका प्रभाव

षष्ठ अध्याय : आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक जीवन **244-293**

i) आदिवासी समाज की मुख्य संस्कृति

ii) संस्कृति और प्रकृति का अंतःसंबंध

iii) सांस्कृतिक परिवर्तन: कारण और परिणाम

सप्तम अध्याय : आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों की भाषा और शिल्प का विवेचन **294-319**

उपसंहार **320-327**

परिशिष्ट **328-397**

विशिष्ट साहित्यकारों से साक्षात्कार

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

सहायक ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएँ

वेबलिंक एवं अन्य संदर्भ

अनुलग्नक (Annexures) **398-403**

भूमिका

भूमिका

साहित्य की कई विधाएँ प्रचलित हैं जिनमें कथा साहित्य सर्वाधिक लोकप्रिय और जनग्राह्य रहा है। कथा साहित्य में न केवल मानव मन को छू लेने की अद्‌भुत शक्ति होती है, बल्कि आत्मचेतन का विस्तार भी होता है। आदिवासी उपन्यास पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि आदिवासी जीवन को केंद्र में रखकर कई उपन्यास लिखे गए और लिखे जा रहे हैं। आदिवासी और गैर आदिवासी लेखकों के सफल प्रयासों से हिन्दी साहित्य जगत में आदिवासी उपन्यासों ने अपना एक अलग स्थान निर्मित किया है। आज के आदिवासी साहित्य का जो स्वरूप दृष्टिगोचर होता है, वह लिखित रूप में है जिसका आधार आदिवासियों का पुरखौती साहित्य रहा है। किसी भी साहित्यिक आंदोलन के उद्‌भव और विकास में परिस्थितियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रसिद्‌ध लेखक डॉ. गंगा सहाय मीणा ने समकालीन आदिवासी साहित्य की शुरुआत 1991 के पश्चात् से मानी है जब भारत सरकार की आर्थिक उदारीकरण की नीतियों में तेजी आई। वर्तमान दौर आदिवासी साहित्य की अवधारणा के निर्माण का दौर है। यद्‌यपि यह पूर्णतः विकसित नहीं हुई है, किन्तु हिन्दी में आदिवासी साहित्य की अवधारणा निर्मित हो रही है। इस शोध में आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों के आधार पर उनके चिंतन के विभिन्न पक्षों को जानने और समझने का प्रयास किया गया है।

भूमंडलीकरण की इस उपभोक्तावादी व्यवस्था में आदिवासियों का जंगल बचाने का प्रयास केवल अपने समुदाय के लिए नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के लिए है। पर्यावरण के उलटफेर से आदिवासी ही प्रभावित नहीं हो रहे हैं, बल्कि समस्त प्राणी जगत प्रभावित हो रहा है। विश्व भर में फैलता कोरोना संक्रमण इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। प्रकृति को स्वच्छ और स्वस्थ रखने का दायित्व मनुष्यों का है। यदि उसे स्वच्छ और स्वस्थ नहीं रखा गया तो सर्वत्र प्रदूषण और अस्वच्छता की प्रतिक्रिया से कोरोना जैसी जानलेवा बीमारी आ सकती है। अतः आदिवासियों का संघर्ष केवल उनका संघर्ष न होकर पूरे समुदाय का संघर्ष है जिसमें सृष्टि की सुरक्षा महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तुत शोध को कुल सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय 'आदिवासी साहित्य: अवधारणा, स्वरूप एवं परिचय' है। इसमें आदिवासी शब्द की अवधारणा को प्रस्तुत किया गया है। आदिवासी शब्द को सर्वाधिक उपयुक्त और सर्वमान्य माना गया है। इससे उनकी भाषा, संस्कृति, पहचान अस्तित्व में आती है। इसके साथ ही आदिवासी साहित्य के स्वरूप पर विस्तृत चर्चा की गई है जिसके अंतर्गत मौखिक और लिखित स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों का परिचय इस अध्याय के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यास: भूमंडलीकरण और विकास की अवधारणा' है। इसके अंतर्गत विकास की अवधारणा को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही विकास से संबंधित योजनाओं (आर्थिक एवं शैक्षिक) की चर्चा की गई है जिसके अंतर्गत टिस्को, एच.ई.सी., बोकारो स्टील प्लांट, स्वर्णरेखा परियोजना, कोयलकारो बाँध परियोजना, शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न छात्रवृत्ति योजना, आवासीय विद्यालय आदि योजनाओं पर प्रकाश डाला गया है। आदिवासी जीवन के संदर्भ में विकास के मायने को प्रस्तुत किया गया है। विकास की व्यावहारिक विसंगतियों के अंतर्गत आदिवासियों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव की चर्चा की गई है।

तृतीय अध्याय 'आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में निहित सामाजिक जीवन' है। इसके अंतर्गत सामाजिक अस्मिता पर चर्चा की गई है। आदिवासी समुदाय की अस्मिता, उनकी पहचान भाषा, संस्कृति, स्वायत्त शासन व्यवस्था, सामूहिकता और सबसे बड़ी बात प्रकृति से महत्त्वपूर्ण रूप से जुड़ी है। समाज में स्त्रियों की अपेक्षाकृत स्वतंत्र स्थिति रही है। आदिवासी समाज जिस संक्रमण की स्थिति से गुजर रहा है उसके प्रभाव पर चर्चा की गई है। आदिवासी समाज का अपना जीवन मूल्य है जिस पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय 'आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित राजनैतिक जीवन' है। इस अध्याय के अंतर्गत आदिवासी समाज में स्वशासन की परिकल्पना पर चर्चा की गई

जिसके अंतर्गत विभिन्न आदिवासी समुदायों की स्वशासन व्यवस्था का वर्णन किया गया है। आदिवासी समुदाय में से ऐसा जन प्रतिनिधि उभरकर सामने आता है जिसमें नेतृत्व करने की अपूर्व क्षमता होती है। तिलका मांझी, सिदो, कान्हू, चाँद, भैरव, सोबरन मांझी, शिबू सोरेन जैसे जनप्रतिनिधि नेता के रूप में उभरे। अतः क्षेत्रीय नेतृत्व का प्रश्न तथा क्षेत्रीय राजनीति बनाम राष्ट्रीय राजनीति पर प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय 'आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में निहित धार्मिक जीवन' है। इसमें आदिवासी समाज की धार्मिक मान्यताओं को प्रस्तुत किया गया है। धर्म का बड़ा ही सहज और बंधनमुक्त रूप आदिवासी समाज में देखने को मिलता है। धर्म का समाज में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं है। बिना किसी मध्यस्थता के व्यक्ति अपने अनुसार धर्म का निर्वाह कर सकता है। आदिवासी समुदाय को अन्य धर्मों में अंतरण करने की प्रक्रिया ने बड़ी तीव्र गति प्राप्त की है। अतः उसके कारणों एवं प्रभावों पर विस्तृत चर्चा की गई है।

षष्ठ अध्याय 'आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक जीवन' है। इस अध्याय में आदिवासी समाज की मुख्य संस्कृति पर प्रकाश डाला गया है। संस्कृति और प्रकृति का बहुत गहरा संबंध है। उनके प्रत्येक अनुष्ठानों, पर्वों-त्योहारों में प्रकृति की उपस्थिति देखी जा सकती है। प्रकृति में परिवर्तन होता है और इस परिवर्तन का अनुभव सबसे पहले आदिवासी ही करते हैं। अतः प्रकृति के साथ आदिवासी संस्कृति के अन्तःसंबंध पर विस्तार से चर्चा की गई है। कई कारणों से उनकी संस्कृति में परिवर्तन आ रहा है। अतः उन कारणों एवं परिणामों पर प्रकाश डाला गया है।

सप्तम अध्याय 'आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों की भाषा और शिल्प का विवेचन' है। इस अध्याय के अंतर्गत आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों की भाषा और शिल्प का विस्तृत विवेचन किया गया है। आदिवासी उपन्यासों की भाषा अपेक्षाकृत सरल एवं सहज है। स्थानीय शब्दों तथा गीतों के माध्यम से आदिवासी जीवन को प्रस्तुत करने का सफल

प्रयास किया गया है। शिल्पगत विशेषता के अंतर्गत दृश्य प्रस्तुति, देशकाल और वातावरण आदि के आधार पर आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों का मूल्यांकन किया गया है।

मैं अपनी शोध निर्देशिका डॉ. मेरी हाँसदा का हृदय से कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ जिनके विद्वतापूर्ण एवं कुशल मार्गनिर्देशन से यह शोध कार्य सम्पन्न हुआ है। छोटी से छोटी शंकाओं को धैर्यपूर्वक सुनना और समाधान निकालना उनकी प्रमुख विशेषताओं में से एक है। उनसे चर्चा के क्रम में विषय की समझ विकसित हुई और मुद्दों को देखने का नजरिया विकसित हुआ। प्रत्येक क्षेत्र में उनका प्रोत्साहन मुझे सदैव सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता रहा है। उनके प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

मैं लेखक अश्विनी कुमार पंकज, वंदना टेटे, वाल्टर भेंगरा 'तरुण', विनोद कुमार, रणेन्द्र जी का विशेष आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने अपना मूल्यवान समय देकर विषय को समझने और इस शोध कार्य को लक्ष्य तक पहुंचाने में मेरी सहायता की है।

मैं वर्द्धमान विश्वविद्यालय की प्रोफेसर रूपा गुप्ता का विशेष धन्यवाद ज्ञापन करती हूँ जिनका महत्त्वपूर्ण सुझाव और सहयोग मुझे निरंतर प्राप्त होता रहा है। उनकी बातें सदैव मुझे ऊर्जा प्रदान करती रही है। प्रो. अरुण होता तथा डॉ. विनोद कुमार, बारासात विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग, के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिनका स्नेह मुझे निरंतर प्राप्त हुआ है। प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. तनुजा मजूमदार और प्रो. वेद रमण पाण्डेय जी के महत्त्वपूर्ण सुझावों के लिए धन्यवाद ज्ञापन करती हूँ। विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिंद्य गंगोपाध्याय जी का विशेष आभार प्रकट करती हूँ जिनके निरंतर सहयोग और सुझाव ने मुझे मजबूती प्रदान की है। डॉ. ऋषि भूषण चौबे तथा डॉ. मुन्नी गुप्ता जी सहित विभाग के सभी सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ। साथ ही इतिहास विभाग के डॉ. नवरस जाट अफरीदी जी और डॉ. मृदु राय जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रो. राजश्री शुक्ला जी के मूल्यवान सुझावों

के लिए धन्यवाद और आभार। विभाग के सभी शोधार्थी मित्रों का प्रोत्साहन अतुलनीय है जिनकी मैं सदैव आभारी रहूँगी।

जीवन के चिरस्थाई साथी मेरे माता-पिता का असीम सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है जिसके लिए मैं सम्पूर्ण हृदय से उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। मैं अपने चाचा जी को विशेष धन्यवाद देना चाहूंगी जिन्होंने मुझे सदैव सही रास्ता दिखाया और मेरा साथ दिया। दादा-दादी के आशीर्वाद और स्नेह ने मुझे सदैव सबलता प्रदान की है। बहन नेहा को अत्यधिक स्नेह और हृदय से आभार।

मैं राष्ट्रीय पुस्तकालय (कोलकाता), साहित्य अकादमी (कोलकाता), भारतीय भाषा परिषद (कोलकाता), सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय (कोलकाता), संवाद (झारखंड) के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जहाँ से मुझे विभिन्न सामाग्री प्राप्त करने में सहायता मिली।

उन सभी का आभार जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से शोध कार्य को पूरा करने में मेरी सहायता की है।

निधि कुमारी गुप्ता